भारत के स्वतंत्रता आन्दोलन में काँगड़ा आज़ाद हिन्द फौज़ के सैनिक शहीद कैप्टन दल बहादुर थापा का योगदान

डॉ. अमर सिंह पराशर
ऐसोसिएट प्रोफेसर, विभाग इतिहास राजकीय महाविद्यालय धर्मशाला (हि.प्र.)

सार:- (*Abstract*) गोरखाओं के वीर जवानों ने भारत की स्वतंत्रता संग्राम में अपने प्राणों की बाजी लगाकर आजाद देश के सपने को साकार करने में अहम् योगदान दिया । इस गोरखा रायफल्स ने मलेशियाई जंगल में अपने अद्भुत साहस का जौहर दिखाया और सिंगापुर में आजाद हिंद फौज़ के कई गोरखा सैनिकों को अंग्रेजों के विरुद्ध होने पर पकड़ा गया । जिन में कैप्टन दल बहादुर थापा एक थे जिन्हें पकड़ कर अंग्रेजों ने दिल्ली में फांसी पर लटका दिया गया।

1.भूमिका:-

शहीद कैप्टन दल बहादुर थापा आज़ाद हिन्द फौज़ के उन गौरवशाली वीर सेनानियों में से एक थे। जिन्होंने अपनी मातृभूमि की आज़ादी के लिये फाँसी के फंदे को सहर्ष स्वीकार किया

2. साहित्य की समीक्षा:-

मैंने यह शोध शिर्षक इसलिए चुना है क्योंकि भारतीय स्वतंत्रता आन्दोलन तथा आज़ाद हिन्द फौज़ पर अनेक शोध कार्य किए गये हैं। परन्तु कॉगड़ा के स्वतंत्रता सेनानियों ने भारतीय स्वतंत्रता आन्दोलन तथा आज़ाद हिन्द फौज़ जो सक्रिय कार्य किया और भारत की आज़ादी में अपना योगदान दिया, इस पर आज दिन तक किसी भी शोधार्थी ने गहनता से शोध नहीं किया है ।

3. उद्देश्य-

इस शोधकार्य में शोधार्थी का उद्देश्य काँगड़ा क्षेत्र के स्वतंत्रता सेनानियों, आज़ाद हिन्द फौज़ के सैनिकों तथा आम जनता की राजनीतिक गतिविधियों व कुर्वानियों को भारतीय राष्ट्रीय आन्दोलन के साथ जोड़ना हैं।

4.कार्यप्रणाली:-

इस शोधकार्य में शोधार्थी ने मौखिक तथा हस्तलिखिक दोनों प्रकार की सामग्री को प्रयोग में लाया गया है । मौखिक सामग्री शोधार्थी ने अति दुर्लभ स्थानों जाकर साक्षात्कारों के माध्यम से इक्कट्ठी की गयी है तथा लिखिक सामग्री के लिए शोधार्थी ने समस्त काँगड़ा क्षेत्र का सर्वेक्षण किया है ।

5. योगदान:-

दलबहादुर थापा का जन्म 4 मार्च, 1907 को वर्तमान हिमाचल प्रदेश के जिला काँगड़ा के सदर मुकाम धर्मशाला कैन्ट (भाग्सू) नगर के निकटवर्ती ग्राम बारहकोठे में गोरखा पल्टन के एक सेवानिवृत सैनिक श्री संतवीर थापा के घर में हुआ। इसका नाम दलबहादुर रखा गया । उन दिनों बच्चों को पूर्ण विकसित होने पर ही स्कूल में दाखिल किया जाता था । इसलिए दलबहादुर को भी परिपक्व उम्र में ही स्थानीय स्कूल में दाखिल किया गया ।

दलबहादुर थापा ने सातवीं कक्षा तक ही शिक्षा प्राप्त की । सत्रह वर्ष की उम्र में दलबहादुर थापा 1924 में 2/1 गोरखा राइफ़ल्स में भर्ती हुए।[1] उन दिनों पढ़े लिखे सैनिकों की संख्या नगण्य होती थी । अतः उन दिनों सातवीं कक्षा तक पढ़े दलबहादुर थापा का सेना में खास प्रभाव था। उनकी गणना शिक्षित सैनिकों में होती थी । उनकी सैनिक सेवा का रिकार्ड भी उत्तम था । अतः उनकी पदोन्नति भी तीव्र गति से होती रही। 1935 की वज़ीरिस्तान के कार्यक्लापों में उन्हें *'मेंशन-इन-डिसपैच'* के प्रशस्ति पदक से सम्मानित किया गया ।[2]

1 सितम्बर, 1939 को यूरोप में जर्मनी द्वारा पोलैंड हमला किये जाने के बाद ब्रिटेन और फ्राँस ने पोलैंड को तत्काल सहायता पहुंचाने की घोषणा की। 3 सितम्बर, 1939 को द्वितीय विश्व युद्ध की घोषणा हो गई । 1941 में जापान का आक्रमण भी ब्रिटेन पर अवश्यंभावी हो चुका था ।[3] 1941 को दलबहादुर थापा की यूनिट को सिंगापुर जाने का हुक्म हुआ । अप्रैल, 1941 को दल बहादुर थापा की यूनिट तोलाराम होती हुई, 22 अगस्त, 1941 को मुम्बई पहुँची । वहाँ से 23 अगस्त, 1941 को जलमार्ग के द्वारा मलाया के लिए रवान हुई और 3 सितम्बर, 1941 को मलाया पहुंची । 2/1 गोरखा बटालियन के अतिरिक्त अन्य गोरखा बटालियन भी मलाया पहुंच चुकी थी लेकिन इस समय तक युद्ध की घोषणा नहीं हुई थी ।

8 दिसम्बर, 1941 को जापान के द्वारा दक्षिणी पूर्वी ऐशियाई क्षेत्र में तैनात मित्र सेना के ऊपर आक्रमण किये जाने की कार्यवाई के साथ ही युद्ध की घोषणा की गई । उसके बाद दिन प्रतिदिन युद्ध की गति तीव्र होती चली गई और 11 दिसम्बर, 1941 तक शत्रु सेना ने ब्रिटिश सेना की दुर्गति कर दी । जापानी सेना के युद्ध कौशल एवं सामरिक शक्ति के सामने ब्रिटिश फ़ौज को घुटने टेकने पड़े। 15 फरवरी, 1942 को जापान ने सिंगापुर पर अधिकार कर लिया और मित्र सेना को जापानियों के आगे आत्मसमर्पण करना पड़ा ।[4] उस युद्ध में 12 जनवरी, 1942 के दिन दलबहादुर को युद्ध के गुमशुदा सैनिक के रूप में घोषित किया गया, लेकिन उन्हें जापान सेना द्वारा युद्ध बन्दी बना लिया गया था ।[5]

17 फरवरी, 1942 के दिन सिंगापुर के 'फरेर पार्क' में हुए ऐतिहासिक समारोह में ब्रिटिश सेना की ओर से लैफ्टिनेंट कर्नल हंट ने लगभग 70 हज़ार युद्ध बन्दी सैनिकों को कैप्टन मोहनसिंह, जिन्हें बाद में जनरल का पद प्रदान किया गया तथा कुछ अन्य ऑफिसरों की उपस्थिति में जापानी सेना के प्रतिनिधि मेज़र फुज़ीवारा के मार्फ़त जापान सरकार को सौंपा ।[6] 17 फरवरी, 1942 में जब आज़ाद हिन्द फ़ौज का गठन हुआ तो दलबहादुर थापा ने भी आज़ाद हिन्द फ़ौज में शामिल होने का फैसला लिया। शीघ्र ही आज़ाद हिन्द फ़ौज के ऑफिसरों द्वारा दलबहादुर थापा को प्रशिक्षित करने तथा उनकी प्रतिभा के कारण उन्हें आज़ाद हिन्द फ़ौज में कमीश्न प्राप्त हुआ और अल्प समय में ही दलबहादुर थापा की कैप्टन के पद पर पदोन्नति हुई ।[7]

नेताजी सुभाषचन्द्र बोस ने 21 अक्तूबर, 1943 को आज़ाद हिन्द फ़ौज की कमान सम्भाली। वह जापान होते हुए सिंगापुर पहुँचे इस समय तक वर्मा पर भी जापानियों का अधिकार हो चुका था। अतः नेताजी सुभाषचन्द्र बोस अपना हैडक्वार्टर सिंगापुर से रंगून ले आये। आज़ाद हिन्द फ़ौज की अस्थाई सेना के द्वारा युद्ध की घोषणा किये जाने के बाद उसे 1944 को विभिन्न मोर्चा पर भेजा गया।[8] आज़ाद हिन्द फ़ौज ने फरवरी, 1944 में वर्मा भारत के सीमा क्षेत्र आराकान के ऊपर हमला किया। दलबहादुर थापा एक महत्वर्पूण मोर्चे के कमाण्डर थे। उनकी कम्पनी ने कुशलतापूर्वक लड़ते हुए इम्फाल में प्रवेश किया। आज़ाद हिन्द फ़ौज के भारतीय सीमा के पार प्रवेश किये जाने के समाचार को विश्व भर में प्रसारित किया गया। आज़ाद हिन्द फ़ौज और ब्रिटिश भारत के सैनिकों के बीच घमासान युद्ध हुआ।

अन्त में ब्रिटिश सेना के सैनिकों को युद्ध भूमि से पलायन करने को बाध्य होना पड़ा। कैप्टन दलवहादुर थापा के सैनिक, दुश्मन के भागते हुए सैनिकों को खदेड़ते रहे। लेकिन दुर्भाग्यवश उसी समय जापान के अन्य सैनिक इम्फाल और कोहिमा के बीच के सड़क सम्पर्क को तोड़ने में सफल हो गये। उसी समय मौसम के प्रतिकूल होने के कारण घनघोर वर्षा हो रही थी। चारों ओर बाढ़ का खतरा था। आज़ाद हिन्द फ़ौज के अनेक सैनिक बाढ़ की चपेट में आ गये। ऐसी असाध्य परिस्थितियों में भी कैप्टन दलवहादुर थापा, यथाशक्ति और साहस के साथ अपने मोर्चे पर डटे रहे। लेकिन आज़ाद हिन्द फ़ौज के मुख्यालय के साथ सम्पर्क विच्छेद होने के साथ साथ जापान के द्वारा गोला बारूद, रसद तथा खाद्य सामग्री इत्यादि आवश्यक सामग्री की आपूर्ति न किये जाने के कारण दलबहादुर थापा को आत्म समर्पण के लिए बाध्य होना पड़ा और 28 जून, 1944 को उन्हें युद्ध बन्दी बना लिए गया।[9]

कैप्टन दलबहादुर थापा को युद्ध बन्दी बनाए जाने और विभिन्न युद्ध बन्दी शिविरों एवं कारावासों में रखे जाने के बाद अन्ततः दिल्ली के लालकिले में लाया गया। अक्तूबर, 1944 में उन्हें दिल्ली लाये जाने पर सैनिक अदालत में उनके विरूद्ध देश विद्रोह का मुकद्दमा चलाया गया। उनके विरूद्ध सैनिक कानून (ऐक्ट) की धारा 41 तथा भारतीय दण्ड विधान की धारा 121 के अन्तर्गत मुकद्दमा दायर किया गया। कैप्टन दलबहादुर थापा को यह भी बताया गया कि यदि वे सैनिक अदालत के सामने क्षमा याचना करते हैं तो उन्हें माफ़ किया जा सकता है।

लेकिन आज़ाद हिन्द फ़ौज के कैप्टन दलबहादुर थापा साधारण व्यक्ति नहीं थे। वह और ही किसी तत्व के बने थे। साथ ही वह एक निष्ठावान् राष्ट्रवादी नेता थे। कैप्टन दलबहादुर थापा के लिए देश की आज़ादी ही सर्वोपरि थी। देश एवं राष्ट्रहित के समक्ष वे अपने जीवन के मूल्य को नगण्य मानते थे। अतः उन्होंने अपने जीवन के बदले राष्ट्रहित को नहीं त्यागा। कैप्टन दलबहादुर थापा राष्ट्रहित के लिए अपने प्राणों को उत्सर्ग करने के लिए उत्सुक थे। मातृभूमि का उद्धार किसी भी मूल्य पर करने के लिए बेचैन रहने वाले समर्पित देशभक्त के द्वारा क्षमा यातना करने का प्रश्न ही नहीं था। अपनी प्रिय मातृभूमि को साम्राज्यवादी ब्रिटिश शासकों के चंगुल से मुक्त कराने के लिए, वे एक सेतु बने और अपने इस पावन उद्देश्य के लिए उन्होंने हँसते हँसते मृत्यु को प्राप्त करने का कठिन संकल्प किया।

सैनिक अदालत में लगभग चार महीने मुकद्दमे की कार्रवाई होती रही। उस अवधि में कैप्टन दलबहादुर थापा को अधिकारी वर्ग कई प्रकार से समझाते, डराते, धमकाते हुए क्षमा याचना के लिए कहते रहे। लेकिन वीर सेनानी दलबहादुर थापा समुद्र की तरह गम्भीर, हिमालय पर्वत की तरह अटल और आकाश के समान अनंत शक्ति के पुंज थे। अतः उन्हें कोई भी लालच और मोहमाया झुका नहीं सके। विवश होते हुए सैनिक अदालत ने 12 फरवरी, 1945 के दिन अपने फ़ैसले में कहा कि -

''राजद्रोही दलबहादुर थापा को आखिरी दम तक फांसी के फँदे पर लटकाया जाएगा।''

भारत में ब्रिटिश राज के तत्कालीन कमाण्डर इन चीफ ने 9 मार्च, 1945 के दिन कैप्टन दलबहादुर थापा को मृत्युदण्ड दिये जाने के फ़ैसले की पुष्टी की।[10] मगर ब्रिटिश सरकार नहीं चाहती थी कि किसी गोरखा जाति के किसी बहादुर को फाँसी दी जाए, क्योंकि इससे गोरखों में भी आज़ादी का जनून पैदा हो सकता था। चालक अँग्रेज़ों ने अनेक चाले चलीं। कैप्टन दलबहादुर थापा की पत्नी श्रीमती चम्पावती तथा परिजनों को दिल्ली बुलाया। यहाँ उन पर दबाव डाला गया कि वह दलबहादुर को कहे कि अपने किये पर माफ़ी मांगे, फाँसी नहीं होगी। उसकी पत्नी श्रीमती चम्पावती ने भी एक न मानी और कहा कि जब उस का कसूर कोई नहीं तो माफी क्यों? अँग्रेज़ी सरकार उनकी जिद्द के आगे हार गई।[11]

15 मार्च, 1945 के दिन कैप्टन दलबहादुर थापा को लालकिले से दिल्ली के केन्द्रीय कारागार में ले जाया गया, जो उन दिनों इन्द्रप्रस्थ एस्टेट के सामने बहादुरशाह जफ़र मार्ग के एक छोर में अवस्थित था। उस कारागार में अमर सेनानी कैप्टन दलबहादुर थापा को 3 मई, 1945 के दिन फाँसी के तख्ते पर लटकाया गया।[12]

6. निष्कर्ष:-

इस प्रकार 38 वर्ष की आयु में काँगड़ा के एक और वीर, कैप्टन दलबहादुर थापा शहीद हो गये परन्तु अमर शहीद कैप्टन दलबहादुर थापा की बहादुरी, वीरता और देशभक्ति के चिन्ह काँगड़ा के पहाड़ी क्षेत्रों में तथा भारतीय राष्ट्रीय संग्राम के इतिहास में सदा अमर व जीवित रहेंगे।

7. संदर्भ सूची :-

1. हिमाचल प्रदेश सरकार: *हिमाचल प्रदेश के स्वतन्त्रता सेनानी, खण्ड प्रथम*, भाषा एवं संस्कृति विभाग,शिमला,1985 पृष्ठ 90.; *देखिये,* साक्षात्कार: श्रीमती आरूणा थापा सपुत्री अमर शहीद दलबहादुर थापा, परिशिष्ट; (7) पृष्ठ 382, Dr. Amar Singh Prashar: *Ph.D Thesis Contribution, of Freedom Fighters and Martyrs of Kangra 1805-1947.*

2. राई, एम.पी.: *वीर जाति की अमर कहानी,* नेपाली से हिन्दी अनुवाद, प्रकाश प्रसाद उपाध्याय, साहित्य अकादमी, नई दिल्ली, 2000 पृष्ठ 115.

3. वही, पृष्ठ 126.

4. हिमाचल प्रदेश सरकार: स्वाधीनता का संकल्प, भाषा एवं संस्कृति विभाग, शिमला, 2005 पृष्ठ45.; देखिये,हिमाचल प्रदेश सरकार: *स्वाधीनता की ओर,* भाषा एवं संस्कृति विभाग, शिमला, 1993 पृष्ठ 70.

5. राई, एम.पी. : *वीर जाति की अमर कहानी,* नेपाली से हिन्दी अनुवाद, प्रकाश प्रसाद उपाध्याय, साहित्य अकादमी, नई दिल्ली, 2000 पृष्ठ 115.

6. National Archives New Delhi: *File No 218/INA (2) Indian National Army orders by Generals Mohan Singh General Officer Commanding Oct., 1942. P 107: Cited by*, National Archives New Delhi: *File No 221/INA- The growth of Indian Nation Army and the General Conditions of Indian pensioners of War in Singapur from 1942-1945 p.108.*

7. राई, एम.पी. : *वीर जाति की अमर कहानी,* नेपाली से हिन्दी अनुवाद, प्रकाश प्रसाद उपाध्याय, साहित्य अकादमी, नई दिल्ली, 2000 पृष्ठ, 115, 116.; *देखिये,* हिमाचल प्रदेश सरकार: *हिमाचल प्रदेश के स्वतन्त्रता सेनानी, खण्ड़ प्रथम* भाषा एवं संस्कृति विभाग, शिमला, 1985 पृष्ठ 90.

8. हिमाचल प्रदेश सरकार: *स्वाधीनता का संकल्प,* भाषा एवं संस्कृति विभाग, शिमला, 2005 पृष्ठ 45.; *देखिये,* राई, एम.पी. : *वीर जाति की अमर कहानी,* नेपाली से हिन्दी अनुवाद प्रकाश प्रसाद उपाध्याय साहित्य अकादमी, नई दिल्ली, 2000, पृष्ठ 129.

9. P. N. Chopra: *Who's who of Indian Martyrs (Vol-1),* Minister of Education and Youth Services, New Delhi, 1969 p.100.; *देखिये,* दिव्य हिमाचल धर्मशाला :21 नवम्बर, 2003.

10. हिमाचल प्रदेश सरकार: *हिमाचल प्रदेश में स्वतन्त्रता संग्राम का संक्षिप्त इतिहास,* भाषा एवं संस्कृति विभाग, शिमला, 1996 पृष्ठ 164.

11. दिव्य हिमाचल धर्मशाला :21 नवम्बर, 2003.; *देखिये,* साक्षात्कार: श्रीमती आरूणा थापा सपुत्री अमर शहीद दलबहादुर थापा, परिशिष्ट; (7) पृष्ठ 382, Dr. Amar Singh Prashar: *Ph.D Thesis, Contribution of Freedom Fighters and Martyrs of Kangra 1805-1947.*

12. National Archives New Delhi: *File No 379/INA-CSDIC (Indian), information report (Part X) Red Fort, Delhi, April 20, 1945. P. 120.; देखिये,* साक्षात्कार: श्रीमती आरूणा थापा सपुत्री अमर शहीद दलबहादुर थापा, परिशिष्ट; (7) पृष्ठ 382, Dr.Amar Singh Prashar : *Ph.D Thesis, Contribution of Freedom Fighters and Martyrs of Kangra 1805-1947.*